डॉ. सुजाता गुप्ता
स्नातक द्वितीय खंड
पत्र - IV
विभाग - हिंदी
दिनांक – 29.04.2020

अंधा युग के अध्ययन को प्रमुख चार बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा गया है :-

(i) मिथकीय चेतना
(ii) प्रयोगधर्मिता
(iii) रंगमंचीय अध्ययन
(iv) आधुनिकता

आधुनिकता – नित्य नए-नए प्रयोग
प्रयोगधर्मिता → साहित्य में प्रयोगों की पुनरावृत्ति नहीं होती है। साहित्य में दर्शन की मान्यता, प्रयोग, अनुभव एवं तर्क से जुड़ी चीजों पर विशेष बल दिया जाता है। खासकर विधाओं के प्रयोग पर विशेष बल दिया जाता है।

* निरंतर प्रयोगों से विधाओं के स्वरूप में नवीन प्रयोग होते हैं।

प्रयोगधर्मिता रचनाकार की निजी इच्छा एवं पुरानी चीजों के संगठन से भी प्राप्त होती है।

यदि देखा जाए तो शीर्षक आदि के अलावे ~~साहित्यकार~~ साहित्यकार की रचनात्मक एवं प्रयोगात्मक गहराई सर्वाधिक चरित्र के ही आधार पर दिखाई पड़ती है। यहीं 'अंधायुग' नाटक में भी ~~कव~~ रचनाकार ने चरित्रों के माध्यम से ~~एक~~ प्रयोगधर्मिता का विपुलांश प्रस्तुत किया है।

अद्भुत है कि एक मिथकीय चेतना कितने भिन्न-2 स्वरूपों में साहित्य की प्रयोगधर्मिता को आधुनिक परिवेश में पाठकों के समक्ष सर्वाधिक सशक्त माध्यम (रंगमंच) में रूपाकार हो प्रस्तुत हुई है।

मिथक – प्राचीन कथातत्व, जो नवीन स्थिति में नया अर्थ वहन करने की क्षमता रखते हैं। ~~और यही~~

जितनी अधिक समाज रचनात्मक होगा वह उतना ही मिथक की सर्जना करेगा।

PAGE NO.
DATE: / /

मिथकों से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि मिथक जनता की रचनात्मकता के प्रतीक हैं। जनता जिस वक्त जिस स्थिति में रहेगी उस वक्त वैसे ही मिथक की रचना होगी। मिथकों के भीतर पहुँचने की जगह होती है, जिसके अनुसार ही रचनाकार अपने युग की संवेदना डालते हैं। यह उनकी अंतर्दृष्टि एवं विचारधारा पर निर्भर करता है। यथार्थ में fantacy जुड़ाती है और यह विचारों का एक नया मुद्दा भी है।

'अंधायुग' में स्थितियों एवं मनोवृत्तियों की सीमा बिल्कुल उलझी हुई एक डोरी के समान है। इस नाटक में युद्ध की मनोदशा पर विचार तात्कालीन यथार्थ को केन्द्र में रखकर किया गया है।

अंधापन का प्रतीक
- धुंधली हुई दृष्टि, जिसके अलावे कुछ अन्य नहीं दिखाई पड़ता
- शारीरिक एवं मानसिक दशा का भी प्रतीक है
- विचारदृष्टि भोथरी हो चुकी है
- अंधत्व मन का भी वाचक है

Scanned with CamScanner

मनुष्य के कर्मों का फल आनेवाली पीढ़ियाँ अधिक भोगती है। कर्म से पृथक होकर भी वह मनुष्य कहलाने के लायक नहीं होता। मनुष्य के सारे कार्यों में एक दृष्टि, समझ एवं सोच स्वाभाविक है। वर्तमान से अलग कोई भी भविष्य नहीं होता है।

धृतराष्ट्र की दुनिया केवल राजप्रासाद, राजसिंहासन और दुर्योधन है। हारे हुए लोगों के पास दर्द होता है, तड़प होती है, पर आत्मविश्वास नहीं होता।

महाभारत, एक भीषण संग्राम भर नहीं था, यह एक ऐसा प्रहार था जिसने पूरे भारतीय मस्तिष्क एवं आस्था को हिलाकर रख दिया था।

'अंधायुग' व्यक्ति के स्तर पर सबकी एक अपनी निजी पीड़ा का बयान है।

बनी-बनाई सभ्यता, जो चरमोत्कर्ष पर थी, उसका ध्वंस दिखाई पड़ता है, महाभारत में।

जब व्यक्ति को पता चले कि जिस रास्ते पर वह लंबे समय से चलता आया है, वह रास्ता ही गलत है, तो वह बिल्कुल टूट जाता है — युयुत्सु की ही भाँति।

Scanned with CamScanner